

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु
॥ श्रीमन्नारायणीये पञ्चसप्ततितमं दशकम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারাযণীয়ে পঞ্চসপ্ততিতমং দশকম্ ॥

কংসরধরণনম্

প্রাতঃ সন্তস্তভোজক্ষিতিপতিরচসা প্রস্তুতে মল্লতূর্যে
সঙ্ঘে রাজ্ঞাং চ মঞ্চানভিযযুষি গতে নন্দগোপেহপি হর্ম্যম্।
কংসে সৌধাধিরুচে ত্বরমপি সহবলঃ সানুগশচারুরেষো
রঙ্গদ্বারং গতোহভূঃ কুপিতকুরলযাপীডনাগারলীচম্ ॥ 75.1 ॥

পাপিষ্ঠাপেহি মার্গাদ্ দ্রুতমিতি রচসা নিষ্ঠুরক্রুদ্ধবুদ্ধে -
রম্বষ্ঠস্য প্রণোদাদধিকজরজুষা হস্তিনা গৃহ্যমাণঃ।
কেলীমুক্তোহথ গোপীকুচকলশচিরস্পর্ধিনং কুস্তমস্য
র্যাহত্যালায়খাস্ত্বং চরণভুরি পুনর্নির্গতো রঞ্জুহাসী ॥ 75.2 ॥

হস্তপ্রাপ্যোহপ্যগম্যো ঝটিতি মুনিজনস্যেয় ধারন্ গজেন্দ্রং
ক্রীডনাপাত্য ভূমৌ পুনরপিপততস্তস্য দন্তং সজীরম্।
মূলাদুন্মূল্য তন্মূলগমহিতমহামৌক্তিকান্যাঅমিত্রে
প্রাদাস্ত্বং হারমেভিল্লিলিতরিরচিতং রাধিকায়ৈ দিশেতি ॥ 75.3 ॥

গৃহ্নানং দন্তমংসে যুতমথ হলিনা
রঙ্গমঙ্গারিশস্ত্বং
ত্রাং মঙ্গল্যাঙ্গভঙ্গীরভসহতমনো -
লোচনা রীক্ষ্য লোকাঃ।
হংহো ধন্যো নু নন্দো নহি নহি পশুপা -
লাঙ্গনা নো যশোদা

नो नो धन्येक्षणाः स्मञ्जिजगति रयमे -

रेति सर्वे शशंसुः ॥ 75.4 ॥

पूर्णं ब्रह्मैर साम्फान्निररधि परमानन्दसान्द्रप्रकाशं

गोपेषु एरं र्यासीर्न खलु बह्जनैस्तारदारैदितोहडुः।

दृष्टैराहथ एरां तदेदम्प्रथममुपगते पुण्यकाले जनौघाः

पूर्णानन्दा रिपापाः सरसमभिजगुस्त्रुकृतानि स्मृतानि ॥ 75.5 ॥

चाणुरो मल्लरीरस्तदनु नृपगिरा मुष्टिको मुष्टिशाली

एरां रामष्ठाभिपेदे ऋट्ऋटिति मिथो मुष्टिपातातिरुक्कम्।

उत्पातापातनाकर्षणरिधरणान्यासतां तत्र चित्रं

मृत्योः प्रागेर मल्लप्रभुरगमदयं डुरिशो बक्कमोक्कान् ॥ 75.6 ॥

हा धिक् कष्टं कुमारौ सुललितरपुषौ मल्लरीरौ कठोरौ

न द्रक्ष्यामो ब्रजामस्त्रुरितमिति जने भाषमाणे तदानीम्।

चाणुरं तं करोद्भ्रामणरिगलदसुं पोथयामासिथोर्यां

पिष्टोहडुनुष्टिकोहपि द्रुतमथ हलिना नष्टशिष्टैर्दधारे ॥ 75.7 ॥

कंसः संरार्य तूर्यं खलमतिररिदन् कार्यमार्यान् पितृंस्ता -

नाहन्तुं र्याप्तमूर्तेस्तुर च समशिषदूरमुंसारणाय।

रुष्टो दुष्टोक्तिभिस्त्रुं गरुड ईर गिरिं मष्मष्मनुदक्षं

खडगर्यारल्लदुस्सडग्रहमपि च हठां प्राग्रहीरौग्रसेनिम् ॥ 75.8 ॥

सद्यो निष्पिष्टसन्धिं डुरि नरपतिमापात्य तस्योपरिष्ठा -

ड्रुय्यापात्ये तदैर एरदुपरि पतिता नाकिनां पुष्परुष्टिः।

किं किं ब्रूमस्तदानीं सततमपि डिया एरदगतात्त्वा स डेजे

सायुज्यं एरद्वधोथा परम परमियं रासना कालनेमेः ॥ 75.9 ॥

तद्भ्रातूनष्ट पिष्टैरा द्रुतमथ पितरौ सन्नमनुग्रसेनं

कृत्वा राजानमुच्छैर्यदुकुलमथिलं मोदयन् कामदानैः।

भक्तानामुत्तमं चोद्धरममरुगुरोरारुप्तनीतिं सखायं
लङ्करा तुष्टो नगर्यां परनपुरपते रुक्मि मे सररुोगान् ॥ 75.10 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये पञ्चसप्ततितमं दशकं समाप्तम् ॥